सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग १०)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोगों की यही मान्यता है कि विषयसेवन से सुख मिलता है। परन्तु वास्तव में विषयसेवन से उसी की माँग बार-बार प्रबल होती है जिससे आकुलतारूपी दु:ख होता है। उसे हम सुख कैसे कह सकते हैं?

Most people believe that sensual indulgence causes happiness. But in reality, indulging the senses results in the increased desire for repeated indulgence which results in the sorrow of anxiety. How then, can it be called happiness?

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कई लोगों की यही मान्यता है कि ग़ुस्सा करने से ही लोग काम ठीक से करते हैं। परन्तु वास्तव में वे अपना काम अपने पूर्वकृत कर्म के अनुसार ही करते है। बल्कि ग़ुस्सा करने से वर्तमान में अपनी मनोदशा बिगड़ती है और पाप-कर्म का बन्ध होने से अपना भविष्य भी बिगड़ता है।

Some people think that only an angry and domineering approach can get people to work properly. But in reality, people work as per our past karmas. Anger harms one's mood at present and the consequent inflow of pāpa karmas shall also damage one's future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

किसी भी प्रकार के डर का कारण भयमोहनीय कर्म होता है। हम जब किसी जीव को दु:ख देते हैं या उसे डराते-धमकाते हैं या उसे मारते हैं तब यह भयमोहनीय कर्म ज़्यादा मात्रा में बन्धते हैं। इसलिये, जिसे भयमुक्त होना है उसे ऐसा बिलकुल नहीं करना चाहिये।

Bhaya-mohanīya karmas cause all sorts of fear. When we cause someone to suffer, or scare and bully them, or hit them, we bind bhaya-mohanīya karmas in copious quantities. Hence, one who wishes to rise above fear should never do such things.

Bhaya-mohanīya karmas - karmas that cause the delusion of fear

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने शरीर से एकत्वबुद्धि (मिथ्यात्व) के कारण डर ज़्यादा लगता है। क्योंकि वैसे जीव शरीर के नाश को अपना नाश समझते हैं। इसलिये जिसे भयमुक्त होना है उसे आत्मज्ञान प्राप्त कर मिथ्यात्व दूर करने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

Identifying with the body is the cause of increased fear. Because one who identifies with the body thinks that the destruction of the body would be his end. Hence, one who wishes to rise above fear should make correct efforts to attain knowledge of the self and get rid of false belief.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने शरीर में एकत्वबुद्धि (मिथ्यात्व) के कारण ही संसार में अनन्त दु:ख झेलने पड़ते हैं। इसलिये जिसे संसार के अनन्त दु:खों से डर लगता हो उसे आत्मज्ञान प्राप्त कर मिथ्यात्व दूर करने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

Identifying with the body causes the endless sorrows one faces in saṃsāra. Hence, one who fears the endless sorrows of saṃsāra ought to make correct efforts to attain knowledge of the self and get rid of false belief.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग मोहान्धकार में डूबे हुए हैं, उन्हें सत्य धर्म जँचता ही नहीं।

Those who are lost in the darkness of delusion can never appreciate Satya Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कई लोग भगवान से प्रेमलक्षणा भक्ति करते देखे जाते हैं। परन्तु सच्ची प्रेमलक्षणा भक्ति सभी जीवों के प्रति प्रेम रखना सिखाती है। क्योंकि भगवान-स्वरूप आत्मा सभी जीवों में समान रूप से विराजमान है। यही मैत्री भावना है।

Some people are seen to practise prema-lakṣaṇā bhakti. In reality, true prema-lakṣaṇā bhakti teaches us to love all living beings as the god-like soul is equally present in every living being. This is true Maitrī Bhāvanā.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

भगवान ने हमें मोक्ष का राजपथ बताया है। इसलिये भगवान का हमारे ऊपर अनन्त उपकार है। वर्तमान में उस राजपथ के बारे में बहुत मत-मतान्तर देखे जाते हैं। इस काल में भी जब कोई ज्ञानी हमें उस सच्चे राजपथ की पहचान करवाते हैं, तब उन ज्ञानी का भी हमारे ऊपर अनन्त उपकार है।

God has done us infinite favours by showing us the highway (supreme path) to mokṣa. Presently, we can see divergence among the doctrines that talk about the supreme path and in such an era, if a self-realised person leads us to the true path then he/she has done us infinite favours.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब कोई ज्ञानी हमें भगवान के बताये सच्चे राजपथ से अवगत कराते हैं तब यदि हमारे हृदय में अगर किसी मत, पन्थ, सम्प्रदाय या व्यक्ति के प्रति आग्रह या हठाग्रह हो तो हम उस सच्चे राजपथ को अपना नही सकेंगे। अनादि से अपने साथ यही होता आ रहा है इसलिये हम अभी तक इस संसार में भटक रहे हैं। अब आगे क्या करना है यह हमें सोचना चाहिये और सच्चे राजपथ की तलाश कर उस पथ पर चलना चाहिये।

When a self-realised person shows us the true highway (supreme path) of liberation as shown by God and if we still obstinately cling to a certain doctrine, sect, tradition or a personality-cult, then we will not be able to follow that supreme path. We have been committing this very mistake since the infinite beginningless time and this is why remain stuck in saṃsāra. Now we have to think for ourselves to understand what needs to be done, to find the supreme path and walk on it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

भगवान के बताये सच्चे राजपथ को पाने के लिये हमें अपने-आप को उसके लायक बनाना आवश्यक है। उस के लिये सन्तोष, सरलता, सादगी, समता, सहिष्णुता, सहनशीलता, नम्रता, लघुता, विवेक, जैसे गुण जीवन में होना अति आवश्यक है।

It is imperative that we make ourselves fit to walk on the highway (supreme path) of liberation as shown by God. For this, we need to develop the virtues of contentment, straightforwardness, simplicity, equanimity, tolerance, forbearance, modesty, humility, judiciousness, etc.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर कोई भी व्यक्ति पर से अपनत्व करेगा तब वह नियम से द:खी होगा क्योंकि पर कभी भी अपना नहीं हो सकता। इसलिये वह नियम से उस जीव के लिये दु:ख का कारण ही बनेगा।

If anyone tries to own anything other than the self, then he/she is bound to be sad because one cannot own anything that is not their own. Hence, possessiveness for the non-self will always be the reason for that jīva's sorrow.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम शास्त्रों का अभ्यास करके ज्ञान अर्जित करते हैं तब साथ में उस ज्ञान को अपने जीवन में आचरण में लाने का विवेक भी परम आवश्यक है।

While we acquire knowledge by studying the śāstras, it is critical to possess the judiciousness to bring that knowledge into action.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वर्तमान में द्रव्य-गुण-पर्याय के विषय में बहुत सारी ग़लतफ़हमियाँ चल रही हैं जिनके बारे में हमने अपनी किताब "सम्यग्दर्शन की विधि" में विस्तार से शास्त्राधारित विवरण दिया है। जिन्हें द्रव्य-गुण-पर्याय की सच्ची समझ बनानी हो उनसे अनुरोध है कि वे "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

Currently, there are huge lacunae in the understanding of dravya-guṇa-paryāya. I have explained these terms as per the scriptures, in my book "Samyagdarshan Ki Vidhi". Those who wish to develop a true understanding of dravya-guṇa-paryāya, are requested to study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance, real
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

त्रिकाल टिकनेवाली वस्तु द्रव्य है। उसकी वर्तमान अवस्था उसकी पर्याय कहलाती है। और द्रव्य की त्रिकाल विशेषताएँ उसके गुण कहलाते हैं।

Dravya is that which is eternal. Its current state is known as its paryāya. The permanent, inalienable attributes of a dravya are known as its guṇas.

Dravya — substance, real
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपेक्षा से जो द्रव्य है वही पर्याय है और जो पर्याय है वही द्रव्य है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

From a certain perspective, the dravya is the paryāya and the paryāya is the dravya. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance, real
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दृष्टिभेद से भेद है। द्रव्यदृष्टि से जो द्रव्य है वही पर्यायदृष्टि से पर्याय है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

Differentiation is a result of varying perspectives. What is dravya from the dravya viewpoint is paryāya from the paryāya viewpoint. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance
Dravya Dṛṣṭi — the ability to see the intrinsic nature/constant unchanging substratum of a person or substance
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Paryāya Dṛṣṭi — seeing only the present manifestation/form of a person or substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर कोई द्रव्य और पर्याय में अपेक्षाकृत भेद न मानकर सर्वथा भेद मानते हों तो उन्हें अभेद द्रव्य की प्राप्ति नहीं होगी। और बग़ैर अभेद द्रव्य की प्राप्ति के सम्यग्दर्शन सम्भव नहीं है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

One who fails to realise that the difference between dravya and paryāya is only notional and not absolute will not be able to understand the abheda dravya. Samyaktva shall not arise in the absence of abheda dravya. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Abheda Dravya — undivided/entire substance
Dravya — substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Samyagdarśana/Samyaktva — transcendental wisdom, enlightened perception, true insight, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्याय परम पारिणामिक भाव की ही बनी हुई है। अर्थात् पर्याय द्रव्य की ही बनी हुई है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के पन्द्रहवें प्रकरण को ध्यान से पढ़ें।

Paryāya is composed of Parama Pāriṇāmika Bhāva. Meaning, paryāya is composed of dravya itself. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapter 15.

Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Parama Pāriṇāmika Bhāva — the sovereign fundamental attribute of the soul, which is permanent and unchangeable
Dravya — substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कई लोग वस्तु को एक सत् न मानते हुए द्रव्य-गुण-पर्याय को तीन सत् मानते हैं। यदि वे अपेक्षा से ऐसा मानते हैं तो ठीक है लेकिन एकान्त से उसे तीन सत् मानना मिथ्यात्व है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

Some people understand the unitary existence of a substance as multiple existences, such as dravya sat, guṇa sat and paryāya sat. If they were to understand this from a certain perspective, it is alright. But if they understand this as the absolute truth, then it is mithyātva. To understand the essence of this statement, please study

Dravya — substance
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Sat - existence
Mithyātva — false belief, which results in continual transmigration

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग द्रव्य-सत्, गुण-सत् और पर्याय-सत् ऐसे तीन अलग-अलग सत् मानते हैं उन्हें अभेद द्रव्य की प्राप्ति नहीं होगी। और बग़ैर अभेद द्रव्य की प्राप्ति के सम्यग्दर्शन सम्भव नहीं है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

Those who understand dravya sat, guṇa sat and paryāya sat as being separate entities instead of being part of a substance, shall not attain the abheda dravya. And samyagdarśana cannot be attained without having attained the abheda dravya. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Sat - existence
Dravya — substance
Abheda Dravya — undivided/entire substance
Guṇa — the permanent inalienable attributes of a substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance
Paryāya Dṛṣṭi — seeing only the present form/manifestation of a person or substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वर्तमान-पर्यायरहित द्रव्य प्राप्त होना सम्भव नहीं। क्योंकि वर्तमान-पर्याय में ही पूर्ण द्रव्य छिपा है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

It is not possible to get a dravya without its present-current paryāya. Because the present-current paryāya contains the entire dravya. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पर्याय-निरपेक्ष द्रव्य प्राप्त होना सम्भव ही नहीं। क्योंकि द्रव्य सदैव पर्याय-सापेक्ष ही होता है न कि पर्याय-निरपेक्ष। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

It is not possible to get a dravya which is free from paryāya. Because no dravya is ever without its paryāyas. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वर्तमान पर्याय में ही शुद्धात्मा छिपी हुई है। यह बात तभी समझ में आती है जब नय का सम्यक् ज्ञान हो जाता है। इस कथन का हार्द समझने के लिये अनुरोध है कि आप "सम्यग्दर्शन की विधि" के चौथे से आठवें प्रकरणों को ध्यान से पढ़ें।

The pure soul is hidden within the current paryāya. This can only be understood when one has attained a samyak understanding of the nayas. To understand the essence of this statement, please study "Samyagdarshan Ki Vidhi", chapters 4 - 8.

Dravya — substance
Paryāya — the constantly changing manifestations of a substance/the present form of a substance

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो लोग सत्य धर्म के सच्चे स्वरूप को समझते है, उन्हें अनेक प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।

Those who understand the true spirit of the Satya Dharma attain freedom from many types of fear.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

किसी भी प्रकार के भय से पीड़ित व्यक्ति का वर्तमान तो बिगड़ता ही है, पापबन्ध के कारण उसका भविष्य भी बिगड़ता है।

If one is afraid, irrespective of what one fears, not only is his present adversely affected but also his future, on account of the bondage of sinful karmas due to fear.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

कुछ बुरा होने की आशंका से भयभीत रहकर हम अपना बुरा होने से पहले ही दुःखी रहना प्रारम्भ कर देते हैं। जबकि अगर अपने पाप का उदय हो तब हम अपना बुरा होना रोक ही नहीं सकते। इसलिये भयभीत न होकर सत्य धर्म पर चलना प्रारम्भ करना ही समझदारी है, जिससे हम अपने पापों को हल्का बना सकें।

Fearful that something bad may happen, we begin to live in fear, thus leading a life of misery. In reality, if there is a fruition of our pāpa karmas, there is no way that we can prevent it. Hence, rather than being afraid, it is more sensible to begin walking on the path of Satya Dharma so that we may alleviate/mitigate the burden of our sins.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इस जगत के ज़्यादातर लोग मतलबी हैं। मगर उन्हें यह नहीं पता कि सभी को अपनी आत्मा के उन्नयन के लिये मतलबी होना है न कि शरीर के लिये।

Most people in this world are selfish. But they do not know that one should be selfish about the emancipation of the soul, not selfish about the body.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपनी आत्मा के उन्नयन के लिये मतलबी बन जाते हैं तब हम अवश्य ही शनैः शनैः जगत के प्रति निस्पृह होते जाते हैं। इससे अपना कल्याण निश्चित होता जाता है।

When we become selfish about the emancipation of the soul, then it is certain that we shall gradually become indifferent to and detached from the world. This ensures our (the soul's) wellbeing.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें जगत की बुराई से नाता तोड़ना है न कि बुरे लोगों को बुरा बताना है। आख़िरकार उनमें भी भगवान आत्मा विराजमान है। उनके प्रति करूणाभाव और माध्यस्थ्यभाव रखना है।

We have to dissociate ourselves from all the evil and sinfulness in this world rather than vilify bad people. After all, they too possess the Bhagavān Ātmā. We have to maintain compassion and indifference towards them.

Bhagavān Ātmā — the pure soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें भगवान की वाणी पर कितना विश्वास है यह हमारे दैनन्दिन व्यवहार से पता चलता है।

How much faith we have in the teachings of God can be known from our day to day behaviour.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपना सोच, वाणी और वर्तन भगवान के कहे अनुसार होने चाहिये। अगर नहीं हैं तो हमें उसे भगवान के कहे अनुसार ढालने का प्रयास करते रहना चाहिये।

Our thoughts, words and deeds should be in accordance with God's teachings. If they are not in conformity, we need to work constantly to ensure that they conform to God's teachings.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें हर कार्य अपने आत्मलक्ष्य से करना है न कि पर के लक्ष्य से। क्योंकि पर के लक्ष्य से किया हुआ कार्य हमें अपनी आत्मा से दूर ले जाता है।

All that we do should be for the benefit of our soul. Not for the benefit of any external factor. Because anything done for the non-self takes one away from the self (our soul).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें यह जाँचते रहना है कि कोई भी कार्य करते समय अपनी आत्मा का लक्ष्य मौजूद रहे, अगर अत्यन्त आवश्यक न हो तो हमें अपनी आत्मा के लक्ष्य से भटकायें ऐसे कार्य से दूर ही रहना चाहिये।

We have to keep examining ourselves to ensure that our focus remains steady on the self (our soul) irrespective of what we are doing. Unless extremely necessary, we should remain far away from anything that takes our focus away from the self.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर अपना लक्ष्य आत्मप्राप्ति के अलावा कुछ और है तब
अपना भविष्य दु:खमय होगा यह तय है।

If our goal is anything other than self-realisation,
then it is certain that sorrow lies in our future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सामान्यत: साधक एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से पहले अशुभ भाव को त्यागता है। आगे फिर शुद्ध भाव के लक्ष्य से शुभ भाव भी अपने आप छूट जाता है जब वह शुद्ध भाव में स्थित हो जाता है।

Ordinarily, the seeker first gives up aśubha bhāva only for the purpose of liberation. Later on, as the seeker advances further, keeping his focus on the śuddha bhāva ensures that even the śubha bhāva goes away on its own when the seeker becomes immersed in the śuddha bhāva.

Aśubha bhāva — inauspicious disposition
Śubha bhāva — auspicious disposition
Śuddha bhāva — pristine disposition, steadily focused on the self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर किसी को शुद्ध भाव की प्राप्ति नही हुई है और वह शुभ भाव को त्यागकर अशुभ भाव में रहता है तब उसका भविष्य अवश्य ही अन्धकारमय है।

If one who has not attained the śuddha bhāva gives up the śubha bhāva and remains in the aśubha bhāva, his future is certainly dark.

Aśubha bhāva — inauspicious disposition
Śubha bhāva — auspicious disposition
Śuddha bhāva — pristine disposition, steadily focused on the self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक शुद्ध भाव में स्थिरता नहीं हो जाती तब तक
एकमात्र शुद्ध भाव के लक्ष्य से अशुभ भाव को त्यागकर
शुभ भाव में रहना चाहिये।

Until one does not become steadfast in śuddha bhāva, he must give up the aśubha bhāva and remain in the śubha bhāva keeping the śuddha bhāva as his sole objective.

Aśubha bhāva — inauspicious disposition
Śubha bhāva — auspicious disposition
Śuddha bhāva — pristine disposition, steadily focused on the self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म का सार शुद्ध भाव की प्राप्ति और शुद्ध भाव में स्थिरता करना ही है।

The essence of Satya Dharma is attaining and remaining steadfastly in the śuddha bhāva.

Śuddha bhāva — pristine disposition, steadily focused on the self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो जीव पुण्य के उदय में बहककर हवा में उड़ने लगते हैं वे नियम से पापकर्म बाँधते हैं।

Those who get carried away with success (which is only due to the fruition of puṇya karmas) are certain to bind pāpa karmas.

Puṇya — virtue, merit, enabling power, auspicious disposition
Pāpa — sin, demerit, disabling power, inauspicious disposition

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

प्रयत्न तो हर कोई करता है लेकिन कामयाबी पुण्य के उदयवालों को ही मिलती है, यह हमें कभी भूलना नहीं चाहिये।

Everyone puts in the effort but success comes to those with puṇya (are experiencing the rise of puṇya karmas). We must never forget this.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपनी कामयाबी को अपनी होशियारी का फल समझते हैं तब नियम से घमण्ड आना तय है। अपनी कामयाबी को अपनी होशियारी तथा अपने भाग्य यानी अपने पुण्य के उदय का फल समझने से घमण्ड से बचा जा सकता है।

If we think that our success is a result of our smartness, then we are certain to develop arrogance. When we realise that our success is due to our smartness as well as the rise of our puṇya karmas, we shall be able to keep arrogance at bay.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर अपने पुण्य के उदय न हो यानी अपने पाप का उदय हो तो हमारी सारी होशियारी धरी की धरी रह जाती है। वह हमें कामयाबी नहीं दिलाती।

In the absence of puṇya, when we are experiencing the rise of pāpa karmas, all our smartness cannot help us. It cannot bring us success.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

होशियार होना बुरा नहीं है पर उसका घमण्ड रखना ग़लत है। उससे पाप बँधते हैं।

Being smart is not bad. But being arrogant about one's smartness is wrong. It leads to the bondage of pāpa karmas.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब तक हम बाहर सुख ढूँढते हैं तब तक सच्चा सुख मिलना कठिन है क्योंकि सच्चा सुख अपनी आत्मा में ही विद्यमान है, कहीं बाहर नहीं।

As long as we look outwards to find happiness, it is difficult to find true happiness because true bliss is found in the soul, not outside.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से सुख को बाहर ही ढूँढा है। इसलिये अनादि से हम दु:खी हैं। अब कब बदलना है अपने आपको? इसी पर विचार करें।

Since beginningless time, we have sought happiness outside, in the external world. This is why we have always been unhappy. Now, when do you want to transform yourself? Focus on this alone.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जानना-देखना आत्मा की पहचान है। उससे आत्मा को पहचान कर उससे अपनत्व (मैंपन) करना चाहिये।

Knowing and seeing are the unique attributes of the soul. Use them to know the self and identify with it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जानने-देखने वाली आत्मा से अपनत्व (मैंपन) करते ही आत्मानुभूति होती है। तब आत्मा के आनन्द स्वभाव का अनुभव होता है। उसे ही आत्मज्ञान कहते हैं, सम्यग्दर्शन कहते हैं।

Self-realisation can only occur when one identifies with the soul, which is the knower and the seer. On attaining self-realisation, one experiences the blissful nature of the soul. This is known as knowledge of the self, or samyagdarśana.

Samyagdarśana/Samyaktva — transcendental wisdom, enlightened perception, true insight, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बुज़ुर्गों को बोझ समझनेवाले यह क्यों नहीं समझते कि वे ख़ुद भी कभी बुज़ुर्ग बननेवाले हैं?

Why don't those who consider their elders to be a burden realise that they too will grow old one day?

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बुज़ुर्गों को बोझ न समझकर उनकी नि:स्वार्थ सेवा करने से कई पापों का नाश होता है और अच्छे पुण्य भी बँधते हैं। इसलिये सभी के लिये यही कर्तव्य है।

Never thinking of one's elders as a burden and serving them unselfishly destroys many sins and results in the bondage of excellent punya karmas. Hence, it is everyone's duty to serve the elders.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम सत्य धर्म के विरुद्ध सोचते हैं तब नियम से अपना भविष्य दु:खमय होगा यह तय है।

When we think against Satya Dharma, we are bound to have a sorrow-filled future. This is absolutely certain.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।